مہودے، دلت مسلمانوں کو انوسوچت جاتی میں رکھنے کا پرشن کیندر سرکار کے پاس وچارادھین ہے۔ سبھی پرمکھ سنودھانک نکائیوں نے دلت مسلمانوں کو انوسوچت جاتی میں رکھنے کی سفارش کی ہے، پھر بھی اس پر کوئی نرنئے نہیں ہو پا رہا ہے۔ میرا سرکار سے یہ نویدن ہے کہ راشٹرپتی ادھیادیش، 1950 میں سنشودھن کر اس میں مسلم شبد بھی جوڑیں، تاکہ 08-0 فیصد والے اس ورگ کو بھی اپنی شیکشک، آرتھک اور سماجک استر سدھارنے کا موقع ملے، وہ بھی سمان سے اپنی زندگی گزار سکیں۔ دھنیواد، صاحب۔

(ختم شد)

श्री महेन्द्र मोहन (उत्तर प्रदेश): सर, मैं एसोसिएट करता हूं।

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): सर मैं भी एसोसिएट करती हूं।

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश): सर,मैं भी एसोसिएट करता हूं।

Demand to recruit youths trained in self-defence and disaster management in regular services of armed forces

श्री हरीश रावत (उत्तराखंड): उपसभाध्यक्ष महोदय, देश के सीमांत क्षेत्रों, विशेषत: उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, असम, जम्मू-कश्मीर सहित कई भागों में युवक-युवतियों में आत्म सुरक्षा एंव राष्ट्र-भक्ति की भावना जगाने तथा उन्हें आत्म-सुरक्षा एंव आपदा प्रबंधन हेतु गहन प्रशिक्षण प्रदान करने की दिशा में SSB ने महत्वपूर्ण कार्य किया हैं। सेवा सुरक्षा बंधुत्व के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए इनको व्यापक प्रशिक्षण दिया गया हैं। इनमें से बड़ि संख्या में लोगों को ITBP एवम् SSB की फोर्स में भर्ती किया जाता रहा हैं। कुछ ही वर्ष पूर्व SSB को गृह मंत्रालय के अधीन एक अतिरिक्त बॉर्डर फोर्स के रूप में सीमा चौकसी का काम सौंपा गया हैं, जो कि भारत-नेपाल सीमा पर तैनात हैं। लेकिन,इस संगठन के साथ आंशिक रूप से जुड़े हुए प्रशिक्षित स्वयं-सेवक/सेविकाओं को किसी प्रकार का कोई भी दायित्व नहीं देने के कारण इनमें निरशा व असंतोष व्याप्त हो रहा हैं।

जून, 1984 में तत्कालीन केन्द्र सरकार ने इनको CRPF में भर्ती करने का निर्णय लिया था, जो कि आगे नहीं बढ़ पाया। ये हजारों स्वयं-सेवक, जो अपने को SSB का गुरिल्ला कहते हैं, आपदा प्रबधंन आदि कार्यो में प्रशिक्षित हैं। इनका उपयोग आपदा प्रबंधन बल के रूल में किया जा सकता हैं। अत: मेरा गृह मंत्रालय से आग्रह हैं कि ऐसे सभी प्रशिक्षित युवक-युवतियों के प्रशिक्षण का लाभ उठाने की योजना बनाई जाए और इन्हें या तो नियमित रूप से फोर्स में भर्ती किया जाए या जो भर्ती के योग्य नहीं हैं, उन्हें आपदा प्रबंधन के कार्यो में जोड़ा जाए और इस हेतु उन्हें अग्रिम प्रशिक्षण एवम् समवर्ती लाभ प्रदान किए जाएं। धन्यवाद।

श्रीमती विप्लव ठाकुर (**हिमाचल प्रदेश**): सर, मैं एसोसिएट करती हूं।

Need to exempt the state of Andhra Pradesh from payment of outstanding dues on account of depoyment of central para-military forces

DR. T. SUBBARAMIREDDY (Andhra Pradesh): Sir, the issue of payment of outstanding dues on account of deployment of Central Para-Military Forces (CPMF) was discussed with the Union Home Minister on 9th/10th August, 2001. The Government of Andhra Pradesh

†[ ]**TransIiteration in Urdu Script.**

has requested several times to write off deployment charges of CRPF as was done in the case of Punjab.

The State has constantly emphasized that the Naxalite Extremist group is not a local organisation. The State Police forces are already overstretched and the State has witnessed heightened vigilance and security requirements. It is, therefore, requested to exempt payment of outstanding dues of Rs. 244,63,35,780/- as on 30.6.2007.

Sir, they are still incurring a lot of expenditure for controlling naxalite activities in Andhra Pradesh. To help the State to meet the situation, more and more funds and help is required to be provided by the Centre in addition to exempting this amount early, so that they are able to control their activities efficiently.

Concern over health hazard caused due to disposal of CFLs in the country

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अपने विशेष उल्लेख के माध्यम से सरकार का ध्यान 'खराब CFL से स्वास्थ्य पर्यावरण को खतरा' विषय की ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

महोदय, भारी भरकम बिजली के बिल से राहत दिलाने वाले काम्पेक्ट फ्लोरसेंट लैम्प (CFL) स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए बेहद खतरनाक हैं। खराब होने के बाद मरकरी और फास्फोरस से भरी इस ट्यूब का निस्तारण प्लास्टिक की तरह एक बड़ी समस्या बन गई हैं। पिछले दिनों एक अनुसंधान से पता चला हैं कि रोशनी देते समय भी CFL स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। विद्युत मंत्रालय हालांकि उस अनुसंधान पर खामोश हैं, लेकिन माना जाता हैं कि CFL खराब होने के बाद कूड़ा-करकट के साथ फैंकी जाने पर उसमें मौजूद मरकरी पर्यावरण को बिगाड़ सकती हैं। यहां तक कि CFL के टूटने पर उस कमरे के दरवाजे और खिड़कियों को कम से कम 15 मिनट तक खोल देना चाहिए, लेकिन सरकारी तौर पर अभी तक यह जानकारी देने के लिए कोई ठोस पहल नहीं हुई हैं। अभी तक सरकार द्वारा इसके फायदे तो गिनाए जाते हैं, लेकिन इससे होने वाले नुकसान का ज़िक्र तक नहीं किया गया हैं। जहां एक ओ हमारे स्वास्थ्य पर मरकरी का बुरा प्रभाव पड़ता हैं और इससे कैंसर, जोड़ों का दर्द जैसी खतरनाक बीमारियां जन्म लेती हैं, वहीं दूसरी तरफ CFL मरकरी द्वारा पर्यावरण को बिगाड़ सकती हैं और जमीन को भी इससे खतरा हैं।

अमेरिका समेत विकसित राष्ट्रों में तो शुरू से ही इसके निस्तारण का नियम हैं, लेकिन भारत में इसके लिए इस संबंध में कहीं किसी भी प्रकार का उल्लेख नहीं किया गया हैं, न इसकी जानकारी दी गई हैं। मैं सदन के माध्यम से सरकार से मांग करता हूं कि वह इसके निस्तारण का नियम बनाए तथा लोगों को इस फायदे के साथ-साथ इसकी क्या –क्या हानिंया हैं, इसके प्रति भी जागरूक करें।

Need to install a statue of Lukhy Shah Vanjara

SHRI TARLOCHAN SINGH (Haryana): Sir, my special Mention is regarding having a statue of Shri Lukhy Shah Vanjara.

It is recorded in the history that the entire land on which the present Parliament Complex, Secretariat and Rashtrapati Bhawan are situated belonged to Shri Lukhy Shah Vanjara who was responsible for organising the cremation of the body of Guru Tegh Bahadur in November, 1675. Everyone is aware that for the sake of freedom of worship to everyone, Guru Tegh Bahadurji, the Ninth Guru of the Sikhs, sacrificed his life and was beheaded in Chandni Chowk during the time of Emperor Aurangzeb. Lukhy Shah took the courage of lifting the body **and** bringing to his village and burnt his house to cremate the body. Gurdwara Rakab Ganj was built on that place. The whole of the village land was donated for the Gurdwara, and, **in** 1915, the British Government took the land for building the above-mentioned complexes. I request that a statue of Lukhy Shah Vanjara should be installed at a suitable